International Journal of Home Science 2022; 8(1): 101-102

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2022; 8(1): 101-102
© 2022 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 16-11-2021
Accepted: 19-12-2021

Rekha Kumari
Research Scholar, University Department of Home Science, VBU Hazaribag, Jharkhand, India

Dr. Renu Bose
Lecturer Senior Scale, University Department of Home Science, VBU Hazaribag, Jharkhand, India

Corresponding Author:
Rekha Kumari
Research Scholar, University Department of Home Science, VBU Hazaribag, Jharkhand, India

जनजाति एवं गैर–जनजातीय महिलाओं में कुपोषण की समस्या, एक अध्ययन

Rekha Kumari and Dr. Renu Bose

सारांश
जनजाति– वह सामाजिक समुदाय है जो राज्य के विकास के पूर्व अस्तित्व में था। जनजाति वास्तव में भारत के आदिवासियों के लिए इस्तेमाल होने वाला एक वैद्यानिक पद है। गैर–जनजातीय लोग मुख्य रूप से मध्य एशिया से आ कर नदियों के किनारे बसे एवं अपनी सभ्यता का विकास किये। प्रतिदर्ष का चुनाव हजारीबाग जिला के शहरी एवं ग्रामीण दोनो क्षेत्रों से निदर्षन पद्धति में बहुस्तरीय पद्धति से किया गयाा। कुल प्रतिदर्ष की संख्या 240 महिलायें थीं। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य आई.सी.एम.आर. द्वारा प्रस्तावित महिलाओं के आहार का संगठन का तुलनात्मक अध्ययन जनजाति एवं गैर–जनजातीय महिलाओं के आहार के संगठन से करना है तथा इस आधार पर यह परिणाम प्राप्त करना है कि उनके आहार का संगठन किस कोटि का है। जनजातीय गर्भवती महिला के आहार का संगठन निम्न कोटि का है। विशेष रूप से प्रोटीन का मुख्य रूप से अभाव देखा गया है।

मुख्य शब्दः – जनजाति, गैर–जनजातीय, महिलाओं में कुपोषण, वैद्यानिक पद

1. प्रस्तावना
जनजाति– वह सामाजिक समुदाय है जो राज्य के विकास के पूर्व अस्तित्व में था। जनजाति वास्तव में भारत के आदिवासियों के लिए इस्तेमाल होने वाला एक वैद्यानिक पद है। अध्ययन क्षेत्र हजारीबाग की कुल आबादी 1.86 लाख है। इसकी आबादी की 4% (5697) संख्या जनजातियों की है।जानजाति या आदिवासी के अन्तर्गत वैसे लोग आते हैं जो आदिकाल से विकास की मुख्य धारा से दूर जंगलों, पहाड़ों, गुफाओं, समुद्रतटीय द्वीप तथा सुदूर मरूस्थल में निवास करते हैं। जनजाति लोगों की अपनी अलग मान्यताएँ एवं परम्पराएँ होती हैं। कुपोषण एक भयंकर समस्या है। महिलाओं के उचित पोषण से उनमें सामान्य स्वास्थ्य, प्रजनन क्षमता तथा कार्य क्षमता उचित रहती है। कभी–कभी आहार में पौष्टिक तत्वों के समावेश के बाद भी उचित आहारीय आदतों के अभाव में पौष्टिक तत्वों का सहीं उपभोग नहीं होता है। अतः इससे संबंधित विविध पक्षों के वास्तविक स्थिती को जानना आवश्यक

2. साहित्य समीक्षा
महिलाओं को पोषण संबंधी शिक्षा देना जरूरी है, जिससे वे पोषक तत्वों से परिपूर्ण परंतु स्वादिस्ट और आर्कषक भोजन परिवार को दे और परिवार की भोजन संबंधी आदतों में परिवर्तन ला सके। ग्येटजकोश, (1946)
आहार एवं पोषण विज्ञान के प्रमुख कार्यकर्त्ता मेकारसन के अनुसार भारत के विकास की राह में कुपोषण एक बड़ी बाधा है। विकासशील देशों में कुपोषण के कारण हैं बहुत कम भोजन उपलब्ध होना, आहार में विटामिन की कमी, रक्तहिनता तथा रोगों की दर में वृद्धी है। पीलू, और गड्स (1957)
रोग के प्रति अनुक्रिया तथा रोगी की प्रक्रिया अत्यधिक मात्रा में सामाजिक, आर्थिक संस्तरण से प्रभावित होती है। किंग (1962), मैसर्स (1968)
महिलाओं के स्वास्थ्य की देख–भाल, सामाजिक मूल्य अत्यन्त घनिष्ठ रूप से सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों से संबंधीत है। लिरसेट (1966), फन्ब्रेनर (1968)
महिलाओं के प्रति पुरूष प्रधान समाज का परम्परागत सोच, ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता की कमी के कारण महिलाओं को पौष्टिक एवं प्रर्याप्त भोजन नहीं मिलता। रोनाल्ड, (1974)
भारत में महिलाओं के स्वास्थ्य व पोषण की स्थिती अत्यन्त निम्न है। अतः महिलाओं हेतु पूरक पोषाहार के प्रावधान को अधिक मजबूत व नियंत्रित करने की आवश्यकता है। कौर, (1987)

महिलाओं को समाज का दुर्बल समुह माना जाता है। उन्हें ऐसी कई सुविधाएँ और अधिकार नहीं मिलतें जो पुरूषों को मिलतें हैं। सिन्हा, (1992)

आज महिलाओं की दशा में सुधार तो अवश्य आई परंतु ग्रामीण क्षेत्र, जनजातीय क्षेत्र की महिलाएँ अभी भी मुख्य धारा से जुड़ नहीं पाई है। सिन्हा, (1995)

आयरन की कमी से महिलाओं का शरीर कमजोर हो जाता है, जिससे वे एनीमिया की शिकार हो जाती है और अनेक बिमारीयो से ग्रसीत भी। रॉस और होर्टन (1998)

महिला विकास कार्यक्रम के तहत चलाये जाने वाले कार्यक्रमों में महिलाओं की स्थिती को सुदृढ़ करने का प्रयास किया जा रहा है। महिला विकास की प्रगति रिपोर्ट (2011)

3. शोध की प्रविधि

वर्त्तमान शोध हजारीबाग जिले का ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र है। शहरी क्षेत्र में हजारीबाग जिले के हरणगंज एवं पतरातु, ग्रामीण क्षेत्र में मोरांगी, हथियारी एवं तोम्बा क्षेत्र को अध्ययन के अन्तर्गत रखा गया। सभी प्रतिदर्ष 240 महिलायें उल्लेखित क्षेत्र से चयनित किये गयें। प्रतिदर्ष का चुनाव निदर्षन पद्धति में बहुस्तरीय पद्धति से की गई है।

4. निष्कर्ष

वर्त्तमान शोध हजारीबाग जिले का ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र है। शहरी क्षेत्र में हजारीबाग जिले के हरणगंज एवं पतरातु ग्रामीण क्षेत्र में मोरांगी, हथियारी एवं तोम्बा क्षेत्र को अध्ययन के अन्तर्गत रखा गया। सभी प्रतिदर्ष 240 महिलायें उल्लेखित क्षेत्र से चयनित किये गयें। प्रतिदर्ष का चुनाव निदर्षन पद्धति में बहुस्तरीय पद्धति से की गई है। वर्त्तमान समाज के महिलाओं से संबंधित है। महिलायें समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका रखती है। इस शोध के माध्यम से सही अवस्था एवं प्रभावित कारकों को जाना जा सका एवं इससे निकाले गये निष्कर्षों से महिलाओं में जागरूकता तथा सरकारी एवं गैर–सरकारी संस्थानों को महिलाओं से संबंधित योजनाओं को बनाने में सहायता मिलेगी। महिलाओं के उचित स्वास्थ्य से ष्वक्ति शाली राष्ट्र का निर्माण होता है।

5. संदर्भ

1. किंग, एस0 (1962)– प्रिसेत्सन ऑफ इलनेस एंड मेडिकल प्रैक्टिस, न्यूयॉर्क, पृ0 57–58
2. कौर, सतनाम (1987)– वूमन इन रूरल डवलपमेंट, मितल पब्लिशर्स दिल्ली, पृ0 71–72
3. ग्येटजकोश, एच0 एस0 और जी0 एच बाटमैन (1946)– मेन एण्ड हंगर, ब्रदर्न
4. पी0 रोनाल्ड– एडवटाइजिंग एंड मास कम्यूनिकेशन ए मॉडल फॉर न्यूट्रीशन इनफॉरमेशन– प्रोग्रा, पैग बुलेटिन (1974)
5. पीलू, आर0 एम0 और एम0 एल0 गड्स (1957)– न्यूट्रीशन इनटेक ऑफ ओमेन फैक्ट्री इमप्लाइज कमपरीजन ऑफ नन एण्ड हाई ऐबसेन्स ग्रूप्स– जे0 एम0 डायटे अऐशोसिएशन।
6. महिला विकास की प्रगति रिपोर्ट, महिला एवं बाल विकास विभाग, जयपुर (2011)
7. मिश्रा सुजाता (2011)– 'वूमन हेल्थ एंड सोशल इश्यू', रोइज पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ0 52–53
8. वेनीडक्स लिरसेट (1966), बोन फन्ब्रेनर (1968), कौन एवं स्कालर (1969), गोल्डस्टोन (1963)– मैनस इमेज इन मेंउिसिन एंड एन्ट्रपोलाफजी, इन्टरनेशनल यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क, पृ0 26–29
9. सिंहा, पी0 आर0 एन0 (1992), रम एवं समाज कल्याण, महिला कल्याण, भारती भवन, नई दिल्ली, पृष्ठ–425
10. सिंहा, पी0 आर0 एन0 (1995), रम एवं समाज कल्याण, महिला कल्याण, भारती भवन, नई दिल्ली, वही पृष्ठ–426
11. सैंसस ऑफ इंडिया प्रमुख जनगणना के अंतिम आँकड़े प्रतियोगिता साहित्य सीरिज (2011)
12. संजीवनी मार्च 2016, पृ0 72–73